ISSN No-2231-5063 Vol.1,Issue.XI/May 2012pp.1-4

Research Paper

वर्तमान वैज्ञानिक युग में संगीत व्यवसाय के विभिन्न क्षेत्र

प्रा. कु. मृणाल प्रभाकरराव कडू
संगीत विभाग
जे. डी. पाटील सांगळूदकर महाविद्यालय,
दर्यापूर

प्रस्तावना :

शिक्षा हमारे जीवन की एक स्वाभाविक एवं नितान्त अनिवार्य आवश्यकता है । परिस्थितियों से, अनुभव से, अध्ययन से सतत सिखते रहने की प्रकिया हमारे जीवन में निरंतर चलती रहती है । हमारे व्यक्तित्व विकास में शिक्षा सहायक और महत्वपूर्ण तो होती ही है, समाज में हमें एक विशिष्ठ व्यक्ति के रुप में प्रतिष्ठा, सम्मान और पहचान भी प्रदान करती है ।संस्थागत शिक्षण संस्था , महाविद्यालयीन , विद्यालयीन संगीत शिक्षा के साथ ही वैज्ञानिक उपकरण जो संगीत के लिए वरदान सिध्द हो रहे है – जैसे माईक्रोफोन, रेकॉर्डिंग के नए–नए तकनीक, टेपरेकॉर्डर कॅसेट्स, रेकॉर्डप्लेयर, सिडीज, आकाशवाणी , दूरदर्शन, कम्प्युटर आदि संचार माध्यम के कारण संगीत उत्तरोत्तर अपने प्रगती पथपर अग्रेसर हो रहा है । साथ ही संगीत शिक्षार्थियों के लिए व्यवसाय के नए–नए द्वार भी खुल रहे है ।

संशोधन की आवश्यकता

मुख्य रुप से उपजीविका के माध्यम के रुप में हमारे जीवन में शिक्षा की एक अहम् भूमिका होती है । जीवन को सुचारु रुप से चलाने के लिए हमें किसी न किसी कार्यक्षेत्र को अपनाना होता है, उसी दिशा में अपनी शिक्षा–दिक्षा के विशय का चयन कर हम अग्रेसर होते है । इसी संदर्भ में जब हम शास्त्रीय संगीत शिक्षा की बात करते है, तो शास्त्रीय संगीत शिक्षा के प्रति भविष्य को लेकर समाज में सदा से ही एक आशंका दिखाई देती है । उपजीविका के माध्यम के रुप में संगीत सहज स्वीकार्य नहीं होता । कुछ हद तक यह बात स्वाभाविक भी लगती है, क्योंकि संगीत एक प्रत्यक्ष प्रस्तुतिपरक कला होने से, इसका सीधा संम्बन्ध मंच से जुडना है । यह भी सच है की, संगीत सिखनेवाला प्रत्येक व्यक्ति कलाकार नहीं बन सकता । इसीलिए उपयुक्त सोच पुर्णतया गलत भी नहीं लगती । लेकिन वर्तमान परिदृश्य एकदम बदल सा गया है । साथ ही संगीत शिक्षार्थियो के लिए व्यवसाय के नए–नए द्वार भी खुल रह है ।

संशोधन पध्दती

इस विशयसंबधी पुस्तके, मासिके, साप्ताहिके, पत्रिका इन सभी के माध्यम से द्वितीय सामुग्री संकलीत करके उसका यथोचित विश्लेशण किया गया ओर इस द्वितीय सामुग्री को शोधपत्र में समाविष्ट किया है ।

संस्थागत संगीत शिक्षा तथा महाविद्यालयीन शिक्षण पध्दतीपर जाने कितने ही आरोप लगाए जाते है , उनकी चर्चा करना भी सामाजिक नही है , बावजूद इसके संस्थाओ, महाविद्यालयों की शान में, प्रतिष्ठा में कोई कमी नही आई है । घराने केवल कलाकारों का निर्माण कर सकते है , किन्तु महाविद्यालयों में, संस्थाओ में शिक्षार्थी के गुणों की पहचान कर, उसकी मर्यादा, उसकी क्षमता के अनुसार उसके व्यक्तित्व विकास का पुर्ण प्रयास किया जाता है । महाविद्यालयीन शिक्षा का मुख्य उद्देश्य संगीत का प्रसार–प्रचार है । संस्था या महाविद्यालय ऐसी समझदार श्रोताओं , अध्यापकों की पीढी का निर्माण करते है , जिसे संगीत शस्त्र व प्रायोगिक पक्ष दोनों का ही बराबर ज्ञान हो । सबसे बडी उपलब्धी होती है उपाधि जो इन शिक्षण संस्थाओं के बिना प्राप्त नहीं की जा सकती और अगर आवश्यक सभी सुविधाएँ पर्याप्त रुप से प्राप्त हो जाए तो हम आप भी कलाकार निर्माण में सक्षम है । शास्त्रीय संगीत के शिक्षण का कार्य तीन स्थानों पर सम्पन्न किया जाता है ।

पहला – वह संगीत शिक्षण संस्थाएँ, जहां केवल संगीत के अध्ययन – अध्यापन का कार्य किया जाता है । (संगीत महाविालय)
दूसरा – विश्वविद्यालयों के संगीत विभाग जो सर्व सुविधा युक्त होते है , जहॉ भरपूर अनुदान भी प्राप्त होते है।
तीसरा – महाविद्यालयों के संगीत विभाग जहॉ अन्य विशयोंके साथ संगीत शिक्षा दी जाती है ।

इन तीनों में अध्ययन – अध्यापन के दौरान होने वाली समस्याओं से हम सब भली प्रकार से अवगत है । हम सभी उन समस्याओं का सामना करते है, उनसे जूझते है । पुनरावृत्ती के दोश को टालते हुए केवल इतना कहना चाहती हूँ, महाविद्यालयों में जिससे अनेक समस्याएँ निर्माण होती है । पर्याप्त वाद्ययंत्र का अभाव, उसकी दुरुस्ति के , रखरखाव के साधनों का अभाव, प्राध्यापकों, संगीतकारों की संख्या पर्याप्त न होना, कंठ संगीत, वाद्य संगीत, एक दूसरे पदो के विराध में प्राध्यापकों की नियुक्ती आदि समस्याएँ कम–अधिक प्रमाण में संभवता सभी महाविद्यालयों में दिखाई देती है । अध्यापन के अलावा महाविद्यालयीन प्रशासन में अपेक्षित अन्य कार्य जैसे – प्रवेश , छात्रसंघ चुनाव, स्नेह सम्मेलन, युवा महोत्सव में सहभाग, जिससे संगीत जैसे प्रायोगिक विशय का अध्ययन – अध्यापन प्रभावित होता रहता है; बावजूद इसके उपयुक्त समस्याओं के समाधान के प्रयास करते हुए हमे अपना मार्ग चलते रहना है , संगीत की भावी पीढी का निर्माण करना है । यह कार्य हमें पूरी निष्ठा समपर्ण से करते रहना है । आवश्यक है हमारे पाठयक्रम में तथा स्वयं में समयानुसार बदलाव की जिससे संगीत शिक्षार्थी का भविश्य निर्धारित हो सके ।

वर्तमान वैज्ञानिक युग में संगीत व्यवसाय के नए–नए क्षेत्र आमंत्रण दे रहे है , बस करनेवाला शिक्षार्थी चाहिए ।

1) शिक्षक – किसी भी शासकिय या निजी शिक्षण संस्था में शिक्षक के रुप में कार्य कर सकते है अथवा अपनी स्वयं की भी कोई संस्था स्थापित कर सकते है ।

2) कलाकार – जिनको विरासत में संगीत के संस्कार प्राप्त होते है , गुरु–शिश्य परम्परा के अन्तर्गत जिनकी उॅची शिक्षा–दिक्षा होती है, वह कलाकार बन सकते है । अपनी कला मंच के माध्यम से प्रस्तुत करने तक की स्थिती में पहुॅचने में एक लम्बा समय, निश्ठा, समर्पण, मेहनत, सतत अभ्यास, मनन, चिन्तन और धैर्य की आवश्यकता होती है , जिनके पास उपयुक्त बाते हो वह योग्य गुरु के मार्गदर्शन में एक कलाकार के रुप में अपनी पहचान बना सकते है ।

3) शास्त्रकार – संगीत के प्रायोगिक पक्ष के साथ ही उसका सैध्दान्तिक पक्ष भी उतना ही महत्वपूर्ण होता है । संगीत प्रस्तुतिपरक कला होने से इसके प्रायोगिक पक्ष में समय – समय पर परिवर्तन होते रहते है । अगर योग्यता है, लेखन क्षमता है तो किसी भी योग्य गुरु के मार्गदर्शन में संगीत के साहित्य का लेखन कर सकते है । संगीत शास्त्रपर अपने व्याख्यान तैयार कर सकते है ।

4) समीक्षक – आजकल संगीत सम्मेलन संगीत गोश्ठियॉ, विभिन्न संस्थाओंद्वारा आयोजित संगीत कार्यक्रमों के आयोजनों में संगीत समीक्षक के रुप में कार्य कर सकते है । बडे–बडे पत्रों के कार्यालयों में नियुक्ती संभव होती है ।

5) संवाददाता –संगीत के कार्यक्रमों का रिर्पोटिंग करने हेतु समाचार पत्रों के कार्यालय में, आकाशवाणी दुरदर्शन में संवाददाता के रुप में कार्य किया जा सकता है ।

6) उद्घोषक – आकाशवाणी , दूरदर्शन में संगीत के कार्यक्रमों के उद्घोशक के रुप में कार्य किया जा सकता है । विभिन्न संस्थाएँ संगीत के कार्यक्रमों के आयोजन करती है , उन संस्थाओं को भी जानकार उद्घोशकों की आवश्यकता होती है ।

7) संयोजक – संगीत के कार्यक्रमों को आयोजित करने वाली संस्थाओं को

एक जानकार संचालनकर्ता की आवश्यकता अनुभव होती है । कार्यक्रम संचालन करना सबके बस की बात नहीं होती, उसके लिए विशेष योग्यता की आवश्यकता होती है । आयोजक संस्थाओं को योग्य संचालनकार्ता की तलाश होती है ।

8) संगीतकार व संगीत निर्देषक – संगीतकार भी जन्म लेते है , बनाए नहीं जाते । यह भी एक ईश्वरी देन है । संगीत की प्रत्येक विधा में संगीतकार की आवश्यकता अनुभव की जाती है । संगीतकार का कार्यक्षेत्र अत्यंत विशाल है , जिन्हें यह ईश्वरीय देन प्राप्त है , वे कार्यक्षेत्र का चयन कर अर्थाजन कर सकते है । विद्यालय , महाविद्यालय में विभिन्न अवसरोंपर विभिन्न प्रासंगिक गीत गाए जाते है । देशभक्ती गीत, बालगीत, बंदिशे, सांस्कृतिक आयोजनों के कार्यक्रमों के गीत आदि क्षेत्र में कार्य कर सकते है । नाटक भी आज बहुत लोकप्रिय है । नाटकों के गीत, पार्श्वसंगीत आदि के लिए भी जानकार संगीतज्ञ की आवश्यकता होती है । यह कार्यक्षेत्र पैसा और प्रसिध्दी दोनों ही देनेवाला है ।

9)पार्श्वगायन – सिनेमा, नाटक, विभिन्न सांस्कृतिक आयोजनों में पार्श्वसंगीत गायकों की आवश्यकता होती है । विज्ञापनों में संगीत एक आवश्यक तत्व माना जाने लगा है , अतःअपनी क्षमता, साधना के बलबूतेपर व्यक्ति उक्त कोशिशों में सफल हो सकता है ।

10) आर्केस्ट्रा – ईश्वर प्रदत्त सुंदर आवाज के धनी अपने लिए स्वयं अपना मंच निर्माण कर सकते है । एक समान अच्छी आवाज प्राप्त लोग साथ मिलजुलकर एक हीमंच से कार्यक्रम प्रस्तुत कर सकते है । नये–नये कार्यक्रमों की योजना बनाकर वाद्यों की संगत से, गायक वादकों का समुह बनाकर कार्यक्रम प्रस्तुत कर सकते है । आजकल सभी जगह आर्केस्ट्रा का प्रचलन बढ गया है । नये–नये इलेक्ट्रोनिक वाद्ययंत्र, लाईट, साऊंड, आदि के माध्यम से अत्यंत महत्वपूर्ण कार्यक्रम प्रस्तुत किये जा सकते है । इन्हीं आर्केस्ट्रा ग्रुप के माध्यम से अच्छे–अच्छे कलाकार, पार्श्वगायकों का निर्माण हो सकता है ।

11) रेकॉर्डस्ट – आकाशवाणी, दूरदर्शन में रेकॉर्डस्ट के पदोंपर कार्य किया जा सकता है । आजकल तकनिको विकास फलस्वरुप रेकॉडिंग के नये –नये तंत्र और साधन उपलब्ध है । रेकॉर्डींग का तकनिकी ज्ञान प्राप्त कर आसानी से यह कार्य सम्पन्न किया जा सकता है । यह ट्रेनिंग कर स्वयं का स्टुडिओं भी स्थापित किया जा सकता है ।

उपयुक्त कार्यो के अलावा और भी कार्यक्षेत्रों की सम्भावनाएँ हो सकती है । जिन कार्यो के लिए धन की आवश्यकता होती है , बॅक द्वारा ऋण लेकर कार्य सम्पन्न किया जा सकता है । एक बात निश्चित है , जो भी कार्य करे, वह कार्य अपने लक्ष्य को स्पष्ट निर्धरित कर सम्पूर्ण निष्ठा, लगन, समर्पण के साथ करे, कर्म को पूजा मानकर करे तो निश्चित रुप से सफलता प्राप्त होगी ।